मीठी तानें

[मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कविताएँ]

कवि

ठाकुर श्रीनाथसिंह

२। दरियांगंज

वितरक : बंसल एण्ड कम्पनी

२४, दरियागंज, दिल्ली–६.

प्रकाशक
रघुवीरशरण बंसल
संचालक
साहित्य संस्थान, दिल्ली

●

●

प्रथम संस्करण
फरवरी १९६२

●

मूल्य
१.०० रुपया

●

चित्रकार
ओमप्रकाश शर्मा

मुद्रक
रामा कृष्णा प्रेस
कटरा नील—दिल्ली।

सूची

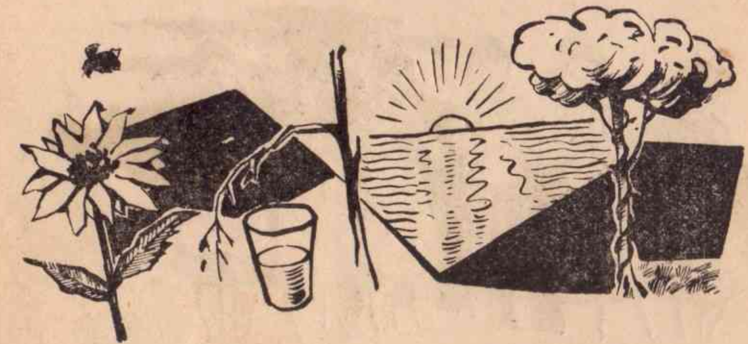
१—बाल-विनय



गंगा-सा निर्मल जीवन दो,
अटल हिमाचल-सा दो ध्यान ।
काम सदा तन आवे सबके,
मन में हो स्वदेश का मान ।

सुख में दुख में एक सरीखी,
होंठों पर हो मृदु मुस्कान ।
हे भगवान् बनादो हमको,
ऐसा कोई मनुज महान् ।

२—सीखो



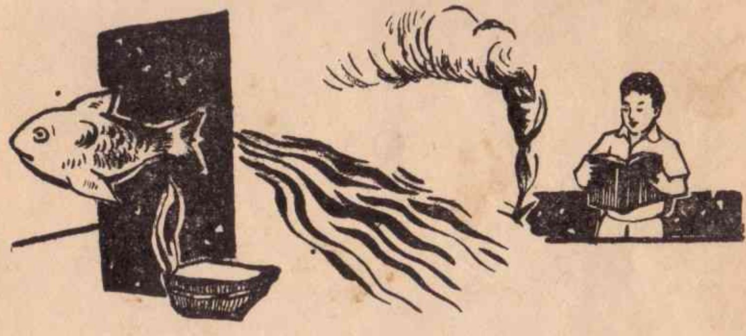
फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना ।
तरु की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना ।

सीख हवा के झोंकों से लो,
हिलना, जगत हिलाना ।
दूध और पानी से सीखो,
मिलना और मिलाना ।

सूरज की किरनों से सीखो,
जगना और जगाना ।

लता और पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना ।

वर्षा की बूँदों से सीखो,
सबसे प्रेम बढ़ाना ।
मेंहदी से सीखो सब ही पर,
अपना रंग चढ़ाना ।



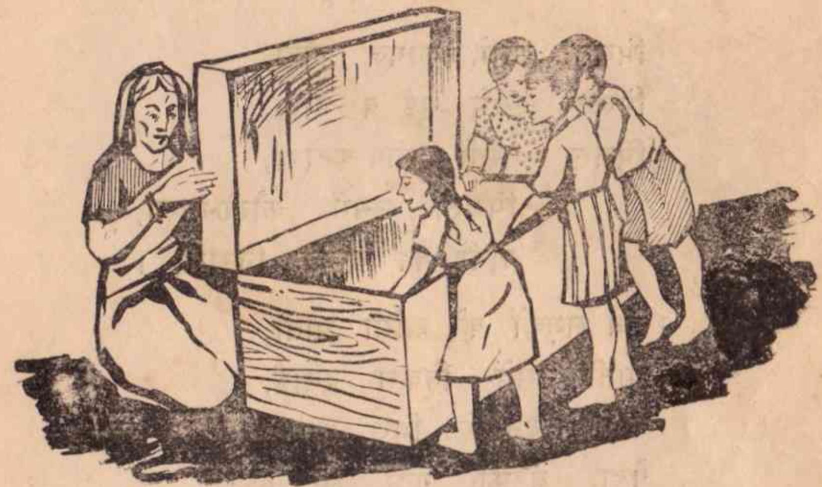
मछली से सीखो स्वदेश के,
लिए तड़प कर मरना ।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना ।

पृथ्वी से सीखो प्राणी की,
सच्ची सेवा करना ।
दीपक से सीखो जितना,
हो सके अँधेरा हरना ।

जल-धारा से सीखो आगे,
जीवन-पथ पर बढ़ना ।
और धुएँ से सीखो हर दम,
ऊँचे ही पर चढ़ना ।

सत्पुरुषों के जीवन से,
सीखो चरित्र नित गढ़ना ।
तथा प्रेम से सीखो बच्चो,
इन पद्यों का पढ़ना ।

३—नानी का संदूक



नानी का सन्दूक निराला,
हुआ धुएँ से बेहद काला ।
पीछे से वह खुल जाता है,
आगे लटका रहता ताला ।

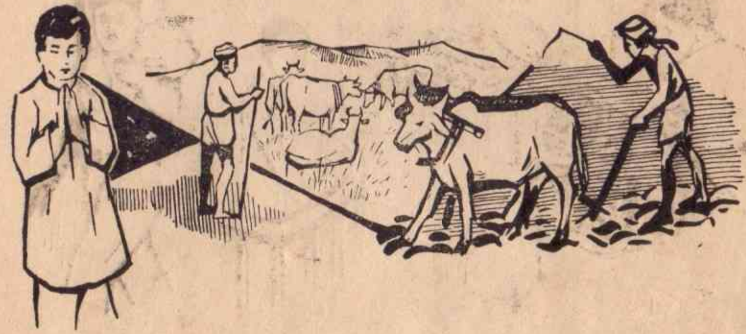
चन्दन-चौकी देखी उसमें,
सूखी लौकी देखी उसमें,
बाली जौ की देखी उसमें,
खाली जगहों में है जाला,
नानी का सन्दूक निराला ।

शीशी गंगा-जल उसमें,
ताम्रपत्र, तुलसीदल उसमें,
चींटा, झींगुर, खटमल उसमें,
जगन्नाथ का भात उबाला,
नानी का सन्दूक निराला ।

मिलता उसमें कागज कोरा,
मिलता उसमें सुई व डोरा,
मिलता उसमें सीप-कटोरा,
मिलती उसमें कौड़ी-माला,
नानी का सन्दूक निराला ।

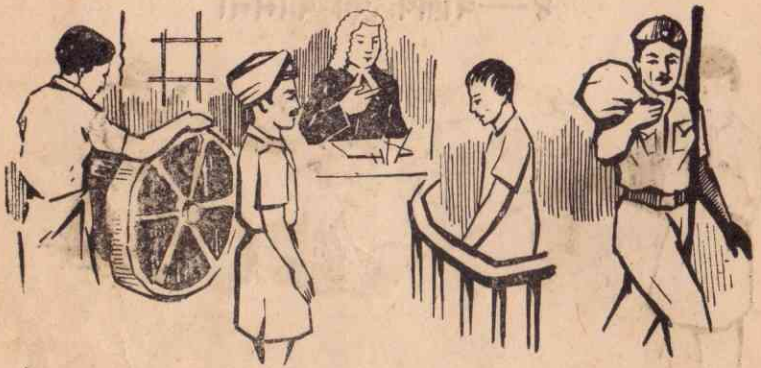
जब लड़कों को खाँसी आती,
आती उसमें निकल दवाई,
कभी ढूँढ़ने से मिल जाता,
पेड़ा, बरफी, गट्टा, लाई ।
जो कुछ खाकर मरना चाहे,
ढूँढ़े उसमें जहर, धतूरा,
डर है चोर न उसे चुरालें,
समझो उसे म्यूज़ियम पूरा ।
उसको छोड़ न लेगी नानी,
दिल्ली का सिंहासन आला,
नानी का सन्दूक निराला ।

४—बालक की कामना



मैं स्वतंत्र भारत का वासी,
काम करूँगा सदा वही ।
जिससे सम्मानित हो जग में,
ऋषियों की यह पुण्य मही ।
मन में तो है यही गाँव में,
बसूँ—करूँ मैं गोपालन ।
दूध-दही की गंगा उमड़े,
हृष्ट-पुष्ट हों भारत-जन ।
और अन्न उपजाऊँ इतना,
इतनी पैदा करूँ कपास ।
कोई रहे न भूखा-दूखा,
कोई रहे न बिना लिबास ।

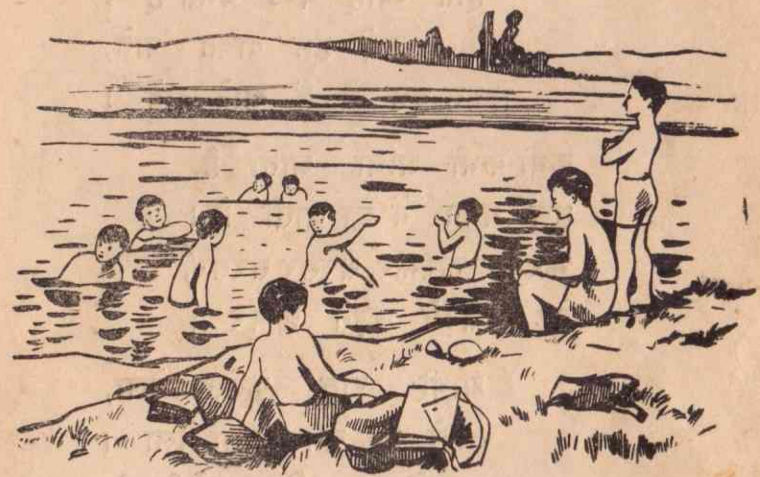
काम पड़े तो बसूँ शहर में,
सीखूँ विविध कला-कौशल ।
बना-बना गाँवों में भेजूँ,
नये यन्त्र औ नूतन हल ।



सरकारी नौकरी करूँ तो,
करूँ घूस की आस नहीं ।
अनाचार या चोर-बजारी
के मैं जाऊँ पास नहीं ।

काम सभी मैं सीखूँ, सीखूँ
अस्त्र-शस्त्र संचालन भी ।
भारत की सेवा में कर दूँ,
अर्पण तन-मन-प्राण सभी ।

५—गर्मी के मज़े



गर्मी के हैं मज़े निराले,
लगे पाठशालों में ताले ।
नहीं गुरूजी का अब डर है,
खेल हो रहा पानी पर है ।

घंटों रोज नहाते हैं अब,
छाया में सुख पाते हैं अब ।
खाते खुश हो बरफ मलाई ।
पीते शरबत औ ठंढाई ।

है बहार आमों की आई,
तरबूजों की हुई चढ़ाई ।
गली-गली बिकता खरबूजा,
छिपा पसीने में भड़भूजा ।

पग-पग पर दूल्हे सजते हैं ।
होते ब्याह बैण्ड बजते हैं ।
नित्य नई हम दावत पाते,
दल-बल से हैं खाने जाते ।

कभी-कभी आँधी आती है,
धूल गगन में छा जाती है ।
झरझर झरझर, सरसर सरसर,
पेड़ उखड़ते उड़ते छप्पर ।

आधी रात फूलता बेला,
तारों का लग जाता मेला ।
सुख से तब दुनिया सोती है,
सपनों की वर्षा होती है ।

गर्मी है इतनी सुखकारी,
हाँ, पर एक ऐब है भारी ।
लंका-सी पृथ्वी जलती है,
जाने यह्व किसकी गलती है ।

६—सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ



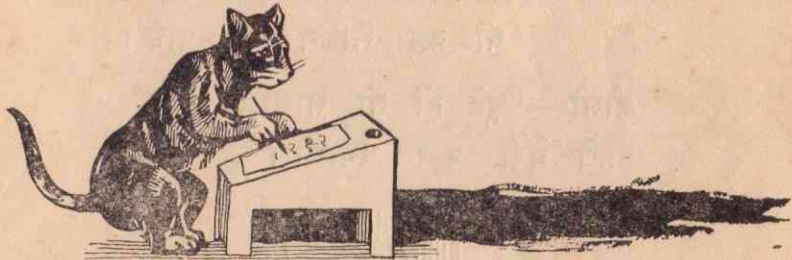
देखो क्या कहती हैं कलियाँ,
हर दम हँसो और मुसकाओ ।
रहो सदा तुम सबके प्यारे,
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ ।

देखो क्या कहती हैं नदियाँ,
हरदम आगे बढ़ते जाओ ।
हरा-भरा रक्खो सबही को,
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ ।

देखो क्या कहते तरु-पौधे,
तुम ऊपर को उठते जाओ ।
जो उपजाओ दान करो सब,
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ ।

देखो क्या कहता है दीपक,
अन्धकार से मत घबराओ ।
जबतक दम में दम बाकी है,
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ ।

७—पूसी और मूसी



लल्लू ने एक बिल्लो पाली,
जिसकी देह बहुत थी काली ।
पूसी उसका नाम पड़ा था,
आदर उसका बहुत बड़ा था ।

दूध-मलाई खाती थी वह,
चूहे नहीं चबाती थी वह ।
एक रोज जब सूना घर था,
कोई नहीं रहा अन्दर था ।

कुर्सी पर जा बैठी पूसी,
औ यह लिखा—"प्रिय सखी मूसी ।
"ऊब रही मैं यहाँ अकेली,
तू है मेरी सुघड़ सहेली ।

चिट्ठी पढ़ते ही चल देना,
साथ किसी को किन्तु न लेना।
हम दोनों खेलेंगी सुख से,
म्याऊँ-म्याऊँ करके मुख से।"

समाचार पा मूसी आई,
थी वह लेकिन भूखी माई।

बोली—"चूहे हों तो लाओ;
पहले मेरी भूख भगाओ।"



पूसी बोली—"म्याऊँ-म्याऊँ,
बहन तुझे मैं क्या बतलाऊँ।
यह पापी पण्डित का घर है,
यहाँ मांस खाने में डर है।

हाँ पर होगी धरी मलाई।
रक्खी होगी खीर-मलाई।
चलो वहीं पर खावें दोनों,
खाकर पेट फुलावें दोनों।"

यों कह दूध-दही के घर में,
जा पहुँची दोनों छिनभर में।

औ आले के पास पहुँच कर,
घात लगाकर मौका पाकर।
लिया खीर से भरा कटोरा,
दोनों ने उसमें मुँह बोरा।

सच है, पढ़ी-लिखी थी पूसी,
पर बिलकुल गँवार थी मूसी।
धीरज छोड़ लगी वह खाने,
चढ़ी कटोरे पर अनजाने।

भरा कटोरा उलट गया तब,
मूसी का तन भीग गया सब।
तब भागी वह खीर चुआती,
बहुत-बहुत मन में पछताती।

तब तक आ पहुँचा घरवाला,
देख खीर का खाली प्याला।
पूसी पर कोड़ा बरसाया,
क्योंकि उसी को घर में पाया।

मूसी को न किसी ने देखा,
या देखा तो मन में लेखा।
है यह कोई खीर-कुमारी,
शक्ल बिल्लियों से है न्यारी।

८—क्या ?



कड़ी धूप में निकले हैं तब,
भूभल से घबराना क्या ?
सागर में जब कूद पड़े,
डूबे-डूबे चिलाना क्या ?
दुनिया में जब आए हैं तब,
दुख से पिण्ड छुड़ाना क्या ?
आपत, चिंता, मौत, निराशा
से भगना भय खाना क्या ?
मिले सफलता या असफलता,
इसमें मन उलझाना क्या ?
आगे कदम बढ़ा देने पर,
पीछे उसे हटाना क्या ?

९—मुन्नी और पिल्ला



मुन्नी से है अधिक चिबिल्ला,
उसका प्यारा छोटा पिल्ला ।
मुन्नी के सँग आता-जाता,
मुन्नी के सँग दौड़ लगाता ।

मुन्नी को अम्मा समझाती,
"भला क्यों न तू पढ़ने जाती ।"
पर मुन्नी कुछ ध्यान न देती,
पिल्ले के सँग वह चल देती ।

दोनों ही करते शैतानी,
ऊब गई थी उनसे नानी ।

कहाँ गए वे पता न चलता,
उन्हें खोजना माँ को खलता ।

खेत, बाग, वन, नदी व नाले,
दोनों ने थे देखे-भाले ।
घर में वे न बैठते छिन भर,
बस घूमा ही करते दिन भर ।

इससे अम्मा ने गुस्सा कर,
बन्द किया ताले के अन्दर ।
मुन्नी करती ऊँ-ऊँ, ऊँ-ऊँ,
पिल्ला करता पूँ-पूँ, पूँ-पूँ ।

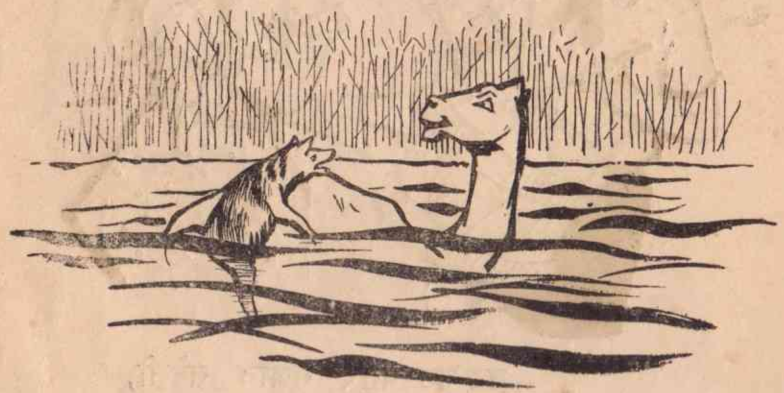
लेकिन माँ ने उन्हें न छोड़ा ।
उसको दया न आई थोड़ा ।
तब मुन्नी बोलीं यों रोकर,
"पिल्ले को तो करदो बाहर ॥"

१०—सहेली



उठ-उठ चतुर सुजान सहेली,
अपने को पहचान सहेली ।
गहने धर दे अलमारी में,
छिदा न नाहक कान सहेली ।
तेरी सेवा का भूखा है,
सारा हिन्दुस्तान सहेली ।
मूरख बनकर बैठ न घर में,
पड़ी न रह दिन भर बिस्तर में
सुन तो क्या कहता है भैया,
चल-चल मेरे साथ समर में ।
रख भैया का मान सहेली,
अपने को पहचान सहेली ।

११—ऊँट और सियार



एक ऊँट और एक सियार,
साथ-साथ चरते थे यार ।
जंगल में करते थे खेल,
था दोनों में भारी मेल ।

एक रोज कह उठा सियार,
आओ चलें नदी के पार ।
हरा-भरा है खड़ा अनाज,
मनमाना खाएँगे आज ।

बस हो गया ऊँट तैयार,
चढ़ा पीठ पर कूद सियार ।

देखा पहुँच नदी के पार,
मालिक सोता पाँव पसार ।

खा करके सियार भरपेट,
कहने लगा घास पर लेट ।
मेरी तो है ऐसी बान,
खा चुकने पर गाता गान ।

बोला ऊँट हाथ तब जोड़,
भैया मुझे न भूखा छोड़ ।
यदि किसान जाएगा जाग,
तो मैं नहीं सकूँगा भाग ।

पर सियार ने एक न मान,
'हुआ ! हुआ' की छेड़ी तान ।
डंडा लेकर उठा किसान,
पीट ऊँट को किया पिसान ।

बहुत हुआ तब ऊँट उदास,
कहने लगा स्यार आ पास ।
आओं चलें नदी के पार,
कहीं न दे यह जी से मार ।

बीच नदी में आकर ऊँट,
बोला पी पानी दो घूंट ।
मैं भी क्यों न जरा लूं लेट,
थोड़ी-सी थकान लूं मेट ।

विनती करने लगा सियार,
अजी लेट लेना उस पार ।
कहाँ ऊँट ने हो नाराज,
मैं भी लूँगा बदला आज ।

लोट लगाई उसने खूब,
गया स्यार पानी में डूब ।
चलता जो मित्रों से चाल,
उसका यह होता है हाल ।

१२—कहो मत, करो

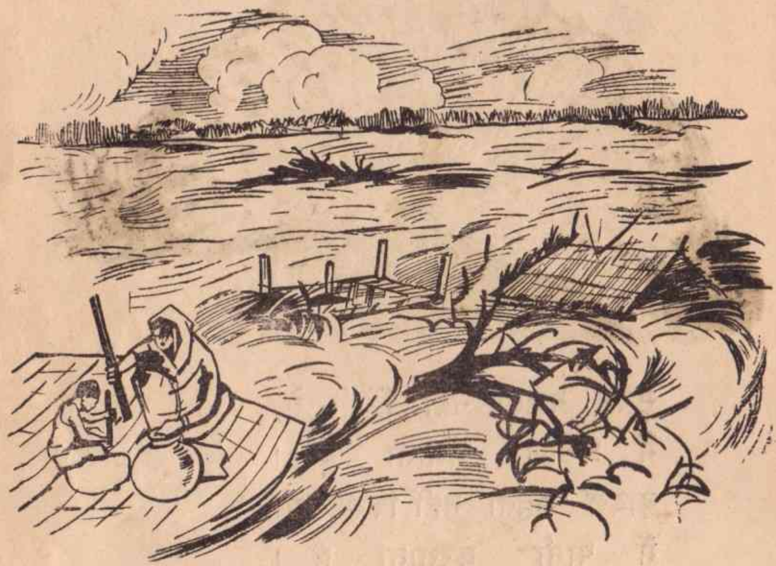


सूरज कहता नहीं किसी से,
मैं प्रकाश फैलाता हूँ ।
बादल कहता नहीं किसी से,
मैं पानी बरसाता हूँ ।

आँधी कहती नहीं किसी से,
मैं आफत ढा देती हूँ ।
कोयल कहती नहीं किसी से,
मैं अच्छा गा लेती हूँ ।

बातों से न किंतु कामों से,
होती है नर की पहचान ।
घूरे पर भी नाच दिखाकर,
मोर झटक लेता है मान ।

१३—गंगा की बाढ़



आ गई बाढ़—आ गई बाढ़,
गंगाजी में आ गई बाढ़ ।
सावन-घन तुमड़ी बजा रहा,
अजगर-नद निज फन रहा काढ़ ।

वह लील रहा मैदान रेत,
वह लील रहा बन-बाग खेत ।
वह लील रहा है ग्राम-नगर,
बढ़ता आता ज्यों विकट प्रेत ।

बह चले मूल से उखड़ पेड़,
बह चलीं फेन के सदृश मेड़ ।
फैला मटमैला जल भूपर,
हैं टूट गए सब बाँध-मेड़ ।

बह रहे विविध झंखाड़-झाड़,
चौकियाँ, खाट, छप्पर, किवाड़ ।
अनुमान न कोई कर सकता,
बस्तियाँ हुईं कितनी उजाड़ ।

दुखियों का हरने कष्ट-क्लेश,
तैयार हो गया पूर्ण देश ।
धन, अन्न, नाव, औषधि, बचाव
का, सुखी हुए सब, पा सँदेश ।

१४—लोरी





सब लड़कों को लगता उबटन
सब लड़कों को लगता तेल ।
सब लड़के रोते हैं लेकिन,
मुन्ना मेरा करता खेल ।

मैं मुन्ना को चित्त लिटाकर,
मैं मुन्ना को पट्ट लिटाकर ।
उबटन-तेल लगाया करती,
गाया करती गीत मनोहर ।

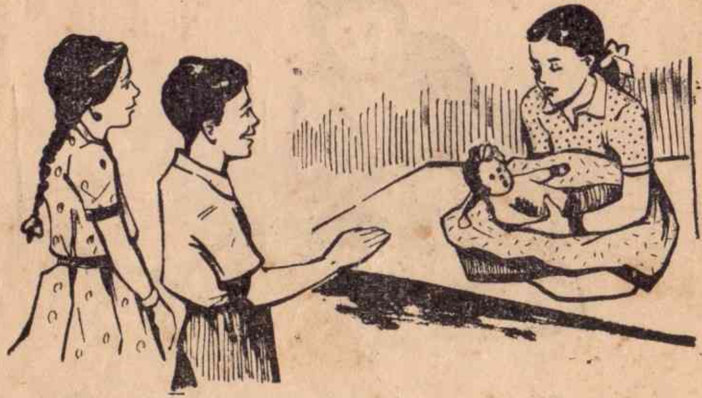
मैं मुन्ना के हाथ पकड़ कर,
मैं मुन्ना के पाँव पकड़ कर ।

तेल लगाकर खींचा करती,
रग-रग में देती हूँ बल भर ।



मैं मुन्ना का मन बहलाऊँ,
मैं मुन्ना को दूध पिलाऊँ ।
उबटन-तेल लगाकर मुन्ना,
बली बने, मैं बलि-बलि जाऊँ ।

१५—गुड़िया की बीमारी



गुड़िया को है चढ़ा बुखार,
दिया गया गुड्डे को तार ।
मुन्ना बनकर चला डाक्टर,
बोला—"लूँगा रुपए चार ।"

मनं लटकाकर मुन्नी बोली—
"यह गुड़िया गरीब है भोली ।
कुछ तो इस पर दया दिखाओ,
कुछ तो अपनी फीस घटाओ ।"

चुन्नी बोली—"सुनो डाक्टर,
एक बात का ध्यान रहे पर ।
कड़वी दवा न बिलकुल देना,
चाहे फीस और ले लेना ।"

१६—चूहे चार



बिल में बैठे चूहे चार,
चुपके-चुपके करें बिचार ।
बाहर आएँ-जाएँ कैसे ?
अपनी जान बचाएँ कैसे ?

बिल के बाहर बिल्ली रानी,
बैठी बिन दाना, बिन पानी ।
रह-रह बोले—"म्याऊँ-म्याऊँ,
चूहे निकलें तो मैं खाऊँ ।"

दिन बीता फिर आई शाम,
लोग लगे करने आराम ।
चूहे रहे समाए बिल में,
जान पड़ी उनकी मुश्किल में ।

बिल्ली कहती म्याऊँ-म्याऊँ,
चूहे निकलें तो मैं खाऊँ ।

चूहे कहते चूँ-चूँ चूँ-चूँ,
बिल्ली को हम चकमा दें क्यूँ ?

सूझा एक उपाय उन्हें तब,
मुरदा बन करके निकले सब ।
बाहर कर ग्रपनी-ग्रपनी दुम,
चारों निकले बनकर गुम-सुम ।

बिल्ली ने झट पकड़ा उनको,
लेकिन पाया ग्रकड़ा उनको ।
बोली—"मरे न खाऊँगी मैं,
ग्रौर कहीं ग्रब जाऊँगी मैं ।"

चली वहाँ से गई बिलैया,
लगे खेलने चारों भैया ।
किया दूर तक सैर-सपाटा,
जो पाया सो कुतरा-काटा ।

●